> जिंदगी से ऊब चुके हो? तो फिर खुद को किसी ऐसे काम में झोंक दो, जिसमें दिल से यकीन रखते हो और तुम वो ख़ुशी पा जाओगे जो तुम्हें लगता था कि कभी तुम्हारी नहीं हो सकती। - डेल कारनेगी

सपने देखना सिखाने वाले फादर गिल्सन

। प्रेरणा... पढ़ाने के हुनर और विशेष देखभाल से नाकाम बच्चे को भी टॉपर में बदला जा सकता है

जाव्हार सरकार
प्रसार भारती के सीईओ
facebook.com/sircar.j.
sircar.j@gmail.com

मुझे आज भी याद है कि जब दसवीं कक्षा के 'ह्यूमेनिटीज' सेक्शन में नई क्लास में शामिल हुआ तो कितना घबराया हुआ था। नौवीं कक्षा पास करने के बाद मुझे 'साइंस' पढ़ने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया था। इसके पहले मैं 8वीं कक्षा में फेल हो चुका था और उन दिनों मुझे सारे लोग स्कूल के 'खराब लड़कों' में शूमार करते थे। ऐसा लड़का जो हमेशा किसी न किसी से लड़ता रहता है और पढ़ाई में जिसकी बिल्कुल रुचि नहीं है। ऐसे में नए विषय के साथ नई कक्षा।

मेरी इस नई क्लास में सबकुछ बड़ा अजीब-सा था: कक्षा का कमरा, वहां के बच्चे और यहां तक की पढ़ाए जाने वाले विषय भी मेरे लिए तो अनजाने ही थे। वहां फिजिक्स, केमेस्ट्री या मैथ्स की पढ़ाई नहीं होती थी, केवल हिस्ट्री, ज्यॉग्रफी और लिटरेटर जैसे मूर्खतापूर्ण (तब मुझे ऐसा ही लगता था) विषय पढ़ाए जाते थे। लेकिन इन सबसे अजीब तो मेरे शिक्षक थे, फादर पी.वाई. गिल्सन। उन्हें तब तक मैंने सिर्फ गलियारों में इधर-उधर गुजरते ही देखा था। मैं जब भी उन्हें देखता तो यह सोचकर हैरान होता कि यह इतना शांत, सौम्य बेल्जियन मिशनरी, जिसका एक खास तरह का फ्रांसीसी लहजा है, अपने लंबे सफेद पादरियों वाले कैसक गाउन में भारत की भीषण गर्मी से बच कैसे गया। पहले ही दिन फादर गिल्सन ने मुझे आगे आकर पहली बेंच पर बैठने को कहा। अब तो हद ही हो गई थी, क्योंकि सबसे आगे की बेंच तो 'अच्छे बच्चों' के लिए होती थी। मैं उस तरह का बच्चा तो कतई नहीं माना जाता था। मुझे आगे बुलाकर वे सीधे अपने लेसन पर आ गए। अपनी खास शैली से पढ़ाने लगे। उन्हें जरा भी ख्याल नहीं था कि मुझे शायद ही कुछ समझ में आ रहा था। मैंने ह्यूमेनिटीज के इन विषयों के बेसिक्स की कक्षा नौवीं में पढ़ाई नहीं की थी। फिर मुझे इतिहास पसंद भी नहीं था, जो मेरे ख्याल से बहुत उबाऊ विषय था। लेकिन बड़ी अजीब बात थी कि फादर विल्सन यह विषय इस तरह नहीं पढ़ाते थे, जैसे वह कोई राजाओं के कामकाज और युद्धों की तारीखों की लंबी, रसहीन, शुष्क सूची हो। मैं अनचाहे ही वे जो पढ़ा रहे थे, उसकी ओर आकर्षित हो गया, क्योंकि वे इतनी रोचक कहानियों का वर्णन क्या, चित्रण ही कर रहे थे।

उनका वर्णन इतना जीवंत था कि मैं तो मंत्र-मुग्ध होकर उन्हें सुनने लगा और न जाने कब धीरे से किसी जादुई कालीन पर सवार होकर फैंटसी की दुनिया में पहुंच गया। जब कक्षा का समय खत्म हुआ तो मुझे खुद पर ही विश्वास नहीं हो रहा था कि मुझे वाकई इतिहास पढ़ने में मजा आया। फिर मैंने पाया कि फादर जब इंग्लिश लिटरेचर पढ़ाते तो उसमें भी मुझे बहुत आनंद आता, जबकि लिटरेचर से तो पहले मुझे नफरत थी। अभी तो आश्चर्य लोक के और भी दरवाजे खुलने थे। इस जादूगर की टोपी से और कहानियां निकलीं और जल्दी ही ऐसी हालत हो गई कि मैं उनकी कक्षाओं का बेसब्री से इंतजार करने लगा। फादर गिल्सन ने मेरा सबसे बड़ा रूपांतरण शायद यह किया कि उन्होंने मुझमें न सिर्फ उनके विषयों के प्रति मेरे भीतर उत्सुकता, रुचि जगा दी बल्कि पढ़ाई के प्रति मुझे जिज्ञासु बना दिया। क्लास टीचर के रूप में वे अध्ययन संबंधी मेरे सारे मामलों के प्रभारी थे। कक्षा के दौरान और बाद में वे आमतौर पर मुझे एक्स्ट्रा लेसन हेतु उनसे मिलने के लिए प्रोत्साहित करते ताकि पूरे साल की पढ़ाई में जो छूट गया था, मैं उसकी भरपाई कर सकूं। वे जो मेरा खास ध्यान रख रहे थे उसका दुनिया के प्रति मेरे नज़रिये में सुकूनदायक असर पड़ा।

लेकिन मेरी सपनों की यह दुनिया पहले क्लास टेस्ट की कठोर वास्तविकता से बिखर गई, क्योंकि मुझे पक्का अहसास था कि मैं तो कक्षा की अंतिम पंक्ति में खड़ा रहने के लिए ही अभिशप्त हूं। पहला ही टेस्ट 'इंग्लिश एसे' का था और मुझे तो हमेशा ही शब्दों का अकाल सताता था। किंतु जब टेस्ट का परिणाम घोषित हुआ तो मैं स्तब्ध रह गया। कोई हल्के से धक्का देता तो मैं नीचे गिर जाता, ऐसी दशा थी : मैं कक्षा में चौथे स्थान पर आया था! मेरे पैरेंट्स की खुशी का तो ठिकाना नहीं रहा। मेरे दोस्तों ने मुझे पिंच किया, लेकिन किसी को इस बात का अहसास नहीं था कि इस सफलता से मेरा आत्म-विश्वास कितना बढ़ गया था। अगला 'आश्चर्य' तब आया जब मैं एरिथमैटिक्स में 'प्रथम' आया, जो इतना कठिन नहीं था, क्योंकि मैं विज्ञान की पढ़ाई करके आया था। मैंने सपने देखना सीख लिया था। फिर इतिहास, भूगोल और अन्य विषयों के नतीजे आए, लेकिन अब प्रथम आने का यह जो नया रोमांच था उसे मैं रोक नहीं सकता था। एक छोटी सफलता के बाद दूसरी सफलता, बेशक उसके पीछे बहुत कठिन परिश्रम और संतों जैसे शिक्षक का सतत मार्गदर्शन होता था। कुछ महीनों बाद हमें पता चला कि फादर गिल्सन अब किसी दूसरे स्कूल में पढ़ाने जाने वाले हैं और एक-दो दिन बाद वे चुपचाप चले भी गए। मैं खूब रोया, क्योंकि और कोई इस तरह मुझे पूरी तरह नहीं बदल सकता था। मैं आज जो भी हूं, जहां भी हूं, यह उनका ही करिश्मा है। उनका आभार किन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है, मुझे नहीं पता।

एक दशक बाद मैं पश्चिम बंगाल के बर्दवान जिले के आसनसोल व दुर्गापुर का अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट नियुक्त हुआ। वहां मुझे एक दोस्त से यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि फादर गिल्सन दुर्गापुर में सेंट जेवियर स्कूल के हैडमास्टर हैं। मैं सीधे उनसे मिलने गया। मैंने जैसे ही फादर के कमरे में प्रवेश किया एक परिचित खुशबू ने मेरा स्वागत किया। उन्होंने बहुत गर्मजोशी से मुझसे हाथ मिलाए। उन्होंने मुझे कहा, 'मुझे तुम पर गर्व है।' वे बिल्कुल वैसे ही थे, हां कुछ बूढ़े जरूर हुए थे। मैं अब मजिस्ट्रेट था, जो पूरी दृढ़ता के साथ विशाल भीड़ के सामने खड़ा हो सकता था, लेकिन उनके सामने मैं पूरी तरह बदल गया। आत्म-विश्वास की प्रतिमूर्ति से अब मैं ऐसा थरथराता, घबराया हुआ 'स्टूडेंट' हो गया था, जिसे बोलने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।

इसके पहले कि मैं अपनी कृतज्ञता को उचित शब्दों में व्यक्त कर सकूं, घंटी बज गई और फादर गिल्सन अपनी कुर्सी से उछलकर खड़े हो गए और कुछ हैरानी के स्वर में कहने लगे, 'ओ माय गॉड, अभी तो एक और कक्षा में जाना है। वहां छोटे-छोटे बच्चे इंतजार कर रहे हैं। नटखट बच्चे, जैसे तुम थे। मुझे जाना चाहिए। गॉड ब्लेस यू, माय सन। और तरक्की करो। पर अब मुझे जाना ही होगा।' उनके पास उस आभार के शब्द सुनने का वक्त नहीं था, जो हमेशा बने रहने वाला है। वह मेरी उनसे अंतिम मुलाकात थी।

। अच्छी सोच

डॉ. श्रीलेखा हाड़ा
होम्योपैथ, मुंबई

हम किसी के शब्दों से आहत क्यों होते हैं?

हम खुद को केंद्र में रखकर दुनिया की घटनाओं और उस पर लोगों की प्रतिक्रिया का आकलन करते हैं। इससे हम खुद के अलावा दूसरों से उलझ जाते हैं। अर्जुन भी तब तक विषाद में था, जब तक उसने खुद को श्रीकृष्ण को अर्पण नहीं कर दिया। तब केंद्र में कृष्ण ही कृष्ण ही थे और इस प्रकार उसका सारा विषाद तत्काल दूर हो गया।

हम हमेशा खुद को हर चीज के केंद्र में मानने लग जाते हैं और उलझन में पड़ जाते हैं। स्वयं को किसी घटना के केंद्र में देखना स्वाभाविक है। किंतु दुनियाभर की आंखें आपको ही देख रही हैं, ऐसा सोचना बहुत सिरदर्द मोल ले लेना है। किसी के पास इतनी फुर्सत नहीं है कि आपको देखें। आपको ही खुद को देखना है कि कहां जा रहे हैं।

महाभारत के अंत में पांडव कर्ण की अंत्येष्टि में गए। तब पता चला कि कर्ण उनका सबसे बड़ा भाई था। कुंती चाहती थीं कि युधिष्ठिर कर्ण की चिता को अग्नि दे। कुंती ने उसे कर्ण को नदी में बहाने की कहानी सुनाई। यह जानने के बाद युधिष्ठिर मां को माफ नहीं कर सका। उसने सभी महिलाओं को कोसना शुरू कर दिया। दरअसल वह खुद को कुंती से श्रेष्ठ साबित कर रहा था। जब हम स्वयं को केंद्र में रखकर लोगों के साथ हुई घटना और उनकी प्रतिक्रिया देखते हैं तो उन्हें गलत समझने लगते हैं। अपनी श्रेष्ठता के दंभ में हम यह भी आकलन नहीं करते कि किन हालातों में वह इसमें उलझा। परंतु जब हम स्वयं को हटा देते हैं तो हमें सच्चाई स्पष्ट नज़र आने लगती है। यदि किसी के आत्म-केंद्रित बर्ताव को हम अपने ही आत्मकेंद्रित नज़रिये से देखेंगे तो कोई अर्थ नहीं निकलेगा। उलटे इससे हम दुखी, कुंठित होने लगेंगे।

रामायण में सीता ने जब राम की लक्ष्मण-लक्ष्मण.. की पुकार सुनी तो वे भयभीत हो गईं। राम स्वर्ण-मृग पकड़ने गए थे और लक्ष्मण को सीता की रक्षा के लिए छोड़ गए थे। जब सीता ने कहा कि लक्ष्मण उन्हें बचाने जाए, तब लक्ष्मण ने कहा कि वे भली-भांति जानते हैं कि राम को कोई खतरा नहीं है। सीता आपा खो बैठीं। उन्होंने लक्ष्मण को कोसा। यह तक कहा कि वे राम को बचाना नहीं चाहते हैं। लक्ष्मण सीता के इस बर्ताव से बुरी तरह आहत होकर राम की खोज में चल दिए। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि उन्होंने पूरी घटना के केंद्र में खुद को नहीं रखा। उन्होंने यह समझने की कोशिश नहीं की कि सीता की मनोस्थिति क्या है। यदि हम किसी भी कथन के बारे में सोचें कि वे उक्त व्यक्ति ने किस मनोदशा में कहे हैं तो फिर हम उस घटना के केंद्र में नहीं रहते। जब कुंती ने युधिष्ठिर को दुर्योधन के पहले जन्म दे दिया तो क्रोध और ईर्ष्या के चलते गांधारी ने अपनी ही कोख को कोसना शुरू कर दिया था।

हमारे साथ आए दिन ऐसा होता रहता है। खराब मौसम से लेकर इंटरनेट या शेयर मार्केट पर किए जाने वाले कमेंट तक हमें परेशान कर देते हैं। हमें लगता है कि यह हम पर कहर बरपा रहे हैं। हमारे आसपास की दुनिया में घटनाएं हमें केंद्र में रखते हुए नहीं हो रही। यदि हम स्वयं को उसमें से हटा लेते हैं तो लगेगा कि सामान्य घटनाएं हो रही हैं, हमें उससे क्या लेना-देना। ऐसे में क्या किया जा सकता है? यदि किसी बात का आपको दुख हो रहा है तो इसका मतलब है, आप स्वयं को उस हालात में घेरे हुए हैं, बाहर निकल नहीं पा रहे हैं। कोई शब्द, कोई वाक्य आपको छलनी कर रहा है, यहां से विषाद शुरू होता है और गीता भी विषाद को दूर करने की औषधि है। अर्जुन ने जब खुद को कृष्ण को समर्पित कर दिया, तो फिर वह केंद्र में कहीं नहीं था, बस कृष्ण ही कृष्ण थे। इसी प्रकार केंद्र में आप भी नहीं है। हालात केवल आपके लिए नहीं है...

आतंक से संघर्ष में अमन चाहने वाले नागरिक आहत न हों

अंडर-30
करंट अफेयर्स पर 30 से कम उम्र के युवाओं की सोच

अभिषेक रखेजा, 20
एडिनबरा यूनिवर्सिटी, यूके
facebook.com/AbiRakheja

उम्मीद है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक को भारत-पाक अहमियत देंगे। नवाज़ शरीफ ने कहा है, 'पाकिस्तान बातचीत के मार्फत अमन चाहता है।' लेकिन बातचीत लंबे अरसे के लिए पीछे चली गई है। रिश्तों में झुलसाने वाली गरमी छाई है। वानी का मारा जाना, कश्मीर में उपद्रव, सशस्त्र बलों की जवाबी कार्रवाई, मोदी का बलूचिस्तान का मास्टर स्ट्रोक- यह सब एक्शन से भरा है।

भारतीय होने के नाते मैं महसूस करता हूं कि भारत शायद गमियों तक स्थिति को संभाल सकता था। सेना ने जाने-अनजाने में कई बच्चों को दृष्टिहीन कर दिया। नाबालिगों के विरुद्ध भी जमकर हिंसा की। शायद किसी अन्य उपाय से इन बातों से बचा जा सकता था। किंतु मेरा आक्रोष तब चरम पर था जब भारतीय सेना के अड्डे पर हमला हुआ। रिपोर्टों के मुताबिक हमले में पाकिस्तान का हाथ था। ऐसी परिस्थितियों में राजनयिक वार्ता को ठंडे बस्ते में डालना जरूरी है। पाकिस्तान का आतंकवाद को उकसाने व मदद करने और अमेरिका की आड़ में जा छिपने का लंबा इतिहास रहा है। इस देश का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहिष्कार हो रहा है, क्योंकि अमेरिकी कांग्रेस ने इसे आतंकवादी राष्ट्र घोषित करने का प्रस्ताव रखा है। हमारी सरकार का संघर्ष पाक सरकार के खिलाफ हो सकता है न कि इसकी जनता के विरुद्ध। पाकिस्तानी लोग उसी तरह अमन चाहते हैं, जैसे हम। इंटरनेट पर कई लोग कह रहे हैं कि पाकिस्तान का नामोनिशान मिटा देना चाहिए। ये लोग भूल जाते हैं कि वे भी उन्हीं आतंकियों की भाषा बाले रहे हैं; जिनके खिलाफ संघर्ष की बात कही जा रही है। जब पेशावर में बच्चे मारे गए थे तो हम सभी को आघात लगा था। यूके में मैं भारतीयों से अधिक पाकिस्तानियों के संपर्क में आया। मैंने देखा कि वे मेरे साथ परिवार के सदस्य की तरह पेश आते हैं। वे मुझसे कहते हैं कि हम सब एक हैं, हम एक जैसी भाषा बोलते हैं और जिन दूरियों की बात की जाती है उन्हें हमारी सरकारों ने गढ़ा है।

हमारा संघर्ष आतंकवाद के विरुद्ध है, आतंकियों के खिलाफ है। भूल से भी ऐसा न हो कि यह संघर्ष ऐसे एक भी पाकिस्तानी को आहत कर जाए, जो अपने देश के लिए, अपने लोगों और अपने परिजनों के लिए अमन चाहता है।

। पॉजी-टून

बहस में ट्रम्प को बौखलाकर मात देना चाहती हैं हिलेरी

लॉन्ग आयलैंड स्थित हॉफ्स्ट्रा यूनिवर्सिटी में इस सोमवार को हिलेरी क्लिंटन और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच पहली सार्वजनिक बहस होगी। यह 1980 में जिमी कार्टर और रोनाल्ड रेगन के बीच हुई बहस के बाद सबसे ज्यादा देखी जाने वाली बहस होगी। हिलेरी मानती हैं कि अब ट्रम्प का झूठ साबित करने से कुछ नहीं होगा बल्कि यह बताना होगा कि मनोवृत्ति के स्तर पर वे सर्वोच्च पद के लायक नहीं हैं। आइए, देखें दोनों ने बहस के लिए क्या तैयारी और रणनीति तय की है। बता रहे हैं **पैट्रिक हैली, एमी चोजिक, मैगी हैबरमैन...**

^ नेटवर्क एग्जीक्यूटिव व राजनीतिक रणनीतिकारों ने उम्मीद जताई है कि बहस को 10 करोड़ लोग देखेंगे, जबकि कार्टर-रेगन बहस को 8 करोड़ लोगों ने देखा था। इसकी तुलना चंद्रमा पर मानव के उतरने की घटना को लेकर पैदा व्यापक जिज्ञासा से की जा रही है। डिबेट का प्रसारण तो विज्ञापनों के बिना होगा, लेकिन बहस के पहले और बाद में चैनलों व केबल पर करोड़ों डॉलर के विज्ञापन प्रसारित होंगे। मैसाचुसेट्स के नैटकेट स्थित ड्रीमलैंड थिएटर में डिबेट वॉचिंग पार्टी आयोजित की गई है।

© The New York Times
दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

हिलेरी क्लिंटन, डेमोक्रेटिक प्रत्याशी

तैयारी: वे डोनाल्ड ट्रम्प के कई रूपों का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयारी कर रही हैं। ट्रम्प बिग थीम पर डटे रहने वाले अनुशासित प्रतिद्वंदी से लेकर बेलगाम हमला करने वाले बड़बोले और विषैले तंज करने वाले विपक्षी के विभिन्न रूपों में सामने आते हैं। प्रैक्टिस सेशन में उन्होंने ट्रम्प के झूठ बोलने या तथ्यों को गलत ढंग से पेश करने का इंतजार करने के बाद पूरे आत्म-विश्वास से प्रहार का शानदार प्रदर्शन किया है।

रणनीति: पूरा जोर खुद को शांत और संयमित बताने पर है। जिस क्षण वे ट्रम्प से हाथ मिलाएंगी और जब वे उन्हें गुड नाइट कहकर बहस का अंत करेंगी, वे खुद को ऐसी नेता दिखाना चाहती हैं, जो आसानी से विचलित हुए बगैर शांत बनी रहती हैं। यदि ट्रम्प ने पुतिन की तारीफ की तो वे रिपब्लिकन हीरो माने जाने वाले पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन का उदाहरण देकर पूछेंगी कि रेगन ऐसे रिपब्लिकन प्रत्याशी के बारे में क्या कहते, जो अपने जनरलों की तो आलोचना करता है पर रूसी राष्ट्रपति की तारीफ के पुल बांध देता है। ट्रम्प ने विदेश विभाग में निजी मेल सर्वर इस्तेमाल का मुद्दा उठाया तो वे टैक्स रिटर्न जाहिर न करने के मुद्दे पर ट्रम्प पर हमला करेंगी।

ताकत: बहुत अच्छी विद्यार्थी। जानकारी को जल्दी से समझकर आत्मसात कर लेती हैं। उनमें लंबे उत्तरों को दो-मिनट के उत्तरों में बदलने का बहुत अच्छा हुनर है। निर्धारित समय की बहस में यह हुनर बहुत कीमती है। उनमें समय का बोध है। बोलते समय उन्हें अंदाजा रहता है कि कितना समय गुजरा और कितना बचा है। तैयारी को उन्होंने रिलीफ वॉल्व की तरह लिया। कुंठा निकाली, मजाक किए और ऐसे व्यंग्य किए, जो आमतौर पर वे सार्वजनिक रूप से नहीं करेंगी।

खामियां: दबाव में सख्त, चिड़चिड़ी नज़र आ सकती हैं। प्रायः जवाब में जरूरत से ज्यादा तथ्य भर देती हैं। ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को चुनौती देने पर रक्षात्मक हो जाती हैं। विदेश मंत्रालय में निजी मेल सर्वर इस्तेमाल करने के सवाल पर कई तरह के जबाव देती हैं। उन्होंने एक स्पष्ट उत्तर की प्रैक्टिस की है।

डिबेट टीम: पूर्व राष्ट्रपति व पति बिल क्लिंटन, प्रेसीडेंशियल डिबेट कोच रॉन क्लैन, वॉशिंगटन लॉयर मिस डन, कैम्पेन रणनीतिकार जोएल बेनेनसन, मित्र व वकील रॉबर्ट बारनेट, कैम्पेन चेयरमैन जॉन डी पोडेस्टा व कम्युनिकेशन्स डायरेक्टर जेनीफर पॉमेरी।

डोनाल्ड ट्रम्प, रिपब्लिकन प्रत्याशी

तैयारी: ट्रम्प को उत्तर बार-बार दोहराना पसंद नहीं है, लेकिन वे संभावित प्रश्नों पर निगाह जरूर डाल रहे हैं। उनके सलाहकार उन्हें विचलित करके उनकी प्रतिक्रिया देख रहे हैं। खास करके जब हैलेरी कहती हैं, 'आप झूठ बोल रहे हैं, डोनाल्ड।' ट्रम्प का मानना है कि नीतिगत बारीकियों के आधार पर बहस जीती या हारी नहीं जाती। सलाहकार भी जानते हैं कि उनके दिमाग में तथ्य और आंकड़े भरना निरर्थक है। वे चाहते हैं कि ट्रम्प नौकरियां, आतंकवाद, सुरक्षा, अमेरिका को फिर ग्रेट बनाने व सीमाओं को बंद करने जैसी बड़ी थीम पर डटे रहें।

रणनीति: बहस में उनकी प्रवृत्ति विरोधी पर हमले करने और उसका अपमान करने की रहती है। सर्कस जैसी प्राइमरी बहस में यह कामयाब रही, लेकिन 90 मिनट की आमने-सामने की बहस में यह खींज पैदा कर सकती है। सलाहकार उन्हें हिलेरी के बोले हर शब्द को गौर से सुनने और उस पर फोकस रखने की सीख दे रहे हैं ताकि जवाबी हमले करने का तरीका तत्काल सोचा जा सके। बहस की तैयारी करना उन्हें पसंद नहीं है, लेकिन उनकी टीम उन्हें बता रही है हिलेरी या मॉडरेटर से मूर्खतापूर्ण बहस में न उलझें। रक्षात्मक होने की बजाय विस्तारपूर्वक बात रखें। उत्तर देने की चिंता करने की बजाय, शांति से वह उत्तर दें, जो वे देना चाहते हैं।

ताकत: राजनीति हो या बिज़नेस उन्हें विपक्षी पर उसकी भाषा, मुद्रा, आय कॉन्टेक्ट और उसके लक्ष्य के आधार पर झपटने में गर्व होता है। वे खुद पर काबू रखेंगे। कभी आगे की ओर झुकेंगे या बहस के विभिन्न दौर में सावधान और धूर्त नज़र रखेंगे ताकि विरोधी को विचलित कर उसका संतुलन बिगाड़ सकें। उन्होंने हिलेरी की पुरानी डिबेट के टेप का सावधानी से अध्ययन किया है। इसके साथ प्रायमरी में अपने सबसे खराब प्रदर्शनों का भी अध्ययन किया है।

खामियां: वे विपक्षी व बहस के सूत्रधार ही नहीं व्यापक मतदाता समूह के प्रति अपमानजनक और नीचा दिखाने वाली बातें कह देते हैं। कुछ मुद्दों पर झूठ बोलने, गलत जानकारी देने या साजिश होने की अफवाह फैलाने की प्रवृत्ति। महिला के दृष्टिकोण से चीजें देखने की दृष्टि नहीं है। सामना महिला से ही है।

डिबेट टीम: कैम्पेन की चीफ एग्ज़ीक्यूटिव मिस स्टीफन बेनॉन, न्यूयॉर्क के पूर्व मेयर रूडोल्फ जुलियानी, न्यूजर्सी गवर्नर क्रिस क्रिस्टी, कम्युनिकेशन एडवाइजर जेसन मिलर, सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी ले. जनरल माइकल फ्लिन, दामाद जेयर्ड क्रशनर।

प्रैक्टिस में हिलेरी के लिए ट्रम्प बन जाते हैं रेन्स

फिलिप रेन्स बहस की प्रैक्टिस के लिए आयोजित मॉक डिबेट में हिलेरी क्लिंटन के सामने डोनाल्ड ट्रम्प की भूमिका निभाते हैं। वे लंबे समय से हिलेरी के सहायक रहे हैं और उनकी व्यक्तिगत व राजनीतिक खामियों को अच्छी तरह जानते हैं। हिलेरी के सीनेटर रहते और बाद में विदेश मंत्री रहते रेन्स ही उनके मुख्य प्रवक्ता, राजनीतिक रक्षक से लेकर गेटकीपर तक रहे हैं। गेटकीपर यानी किसे हिलेरी तक पहुंचने देना है, यह वही तय करते थे। वे उस लड़ाकू किस्म की बेलगाम राजनीति के सिद्धहस्त खिलाड़ी हैं, जो ट्रम्प को बहुत पसंद है। उनके चयन से साफ है कि हिलेरी चाहती हैं कि सामने ऐसा कोई हो, जो उनकी खामियों को जानने के साथ यह भी जानता हो कि उसे कैसे भुनाया जाए। वे हिलेरी के उस छोटे से समूह के सदस्य हैं जो कड़ाई से और बेबाकी के साथ मुंह पर उनकी गलतियां बता सकते हैं। अपनी किताब 'हार्ड च्वाइसेस' में हिलेरी ने रेन्स को जुनूनी, वफादार और बहुत चतुर व्यक्ति बताया। रेन्स का काम कोई आसान नहीं है। उन्हें भी सारी पुरानी डिबेट देखनी पड़ी हैं। नीतिगत बयानों व दस्तावेजों का अध्ययन करना पड़ा है। ट्रम्प को मॉक डिबेट में रुचि नहीं है और न इसके लिए उनका कोई खास व्यक्ति है। वे मॉक डिबेट में सलाह के बावजूद लेक्टर्न का उपयोग भी नहीं करते हैं।

क्युबन के जवाब में जेनिफर को लाने की धमकी

डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि वे बहस में जेनिफर फ्लॉवर्स को आमंत्रित करेंगे, जो सबसे अगली पंक्ति में बैठेंगी। ट्रम्प ने ट्विटर पर धमकी के अंदाज में इस आशय का ट्वीट किया है। 1992 के बिल क्लिंटन के चुनाव अभियान में जेनिफर ने क्लिंटन के साथ अफेयर होने का दावा कर हंगामा मचा दिया था। ट्रम्प ने क्लिंटन के विवादास्पद संबंधों को हिलेरी पर चारित्रिक हमला करने के लिए इस्तेमाल किया है। बाद में बिल क्लिंटन ने माना था कि 1977 में एक बार उनके जेनिफर से रिश्ते रहे हैं। जेनिफर ने हिलेरी पर इस रिश्ते में 'सहायक' की भूमिका निभाने का आरोप लगाया है। कमीशन ऑन प्रेसीडेंशियल डिबेट्स की ओर से दोनों पक्षों को उनके समर्थकों के लिए टिकट मिलते हैं। हालांकि अभी स्पष्ट नहीं है कि ट्रम्प की ओर से जेनिफर को टिकट भेजा गया है अथवा नहीं। बहस के अतिथियों का चुनाव करते वक्त दोनों पक्ष प्रायः मनोवैज्ञानिक युद्ध में उलझ जाते हैं। हिलेरी ने जब डलास मैवरीक्स बास्केटबॉल टीम के मालिक मार्क क्युबन का चुनाव किया तो उनके दिमाग में भी यही बात थी। क्युबन ने सोशल मीडिया और इंटरव्यू में ट्रम्प को राष्ट्रपति पद का 'सबसे खतरनाक' प्रत्याशी बताकर उनकी खूब बखिया उधेड़ी है। उन्होंने ट्रम्प को बहस की चुनौती भी दी थी।

बढ़ती आर्थिक सुस्ती से चीन के भविष्य को लेकर चिंता

ऑस्ट्रेलिया में घबराए चीनियों के निवेश का सैलाब

• कीथ ब्रैडशर, बिज़नेस एवं इकोनॉमिक रिपोर्टर

दुबले-पतले व काले बालों वाले ली मिडोक्राफ्ट लंदन, मिलान और सिंगापुर में मॉडलिंग करते थे। फिर वे अपने वतन लौटने का सपना पूरा करने के लिए ऑस्ट्रेलिया लौटकर हर्बल दवाइयां बेचने लगे। नाकाम होकर सारी जमा पूंजी खो बैठे। तब तक फैशन की दुनिया में कई नए चेहरे आ गए, इसलिए मॉडलिंग में लौट नहीं सकते थे। फिर दसियों हजार ऑस्ट्रेलियाइयों की तरह वे भी खदानों में काम करने चले गए।

2004 में अपने पास बचे 4 हजार डॉलर (2.40 लाख रुपए) से उन्होंने क्रेन ऑपरेट करने का दो हफ्ते का कोर्स किया। उन्होंने देखा था कि खनन कंपनियां वेल्डर, इलेक्ट्रिशियन और क्रेन ऑपरेटर के लिए इतनी शिद्दत से तलाश करती थीं कि वे ऐसा कोई दिख जाए तो शोफर वाली कार भेजकर उन्हें बुलवाती, हवाई टिकट देकर उत्तर-पश्चिमी तटीय ऑस्ट्रेलिया भेज देतीं। तब चीनी अर्थव्यवस्था तूफानी रफ्तार पर थी और उसे ऑस्ट्रेलिया के सारे खनिज चाहिए थे। तब मिडोक्राफ्ट जैसे कर्मचारी लगातार 13 दिन तक रोज 12 घंटे की शिफ्ट में काम करते। फिर एक दिन छुट्टी और फिर 13 दिन काम। तब चीन को खनन निर्यात 100 अरब डॉलर (6600 अरब रु) प्रतिवर्ष था। यानी वहां के हर व्यक्ति को 4300 डॉलर। 2011 तक मिडोक्राफ्ट 2,50,000 डॉलर (1.67 करोड़ रुपए) कमाने लग गए। फिर चीनी अर्थव्यवस्था सुस्त होने लगी। खदानों में काम ठप पड़ गया। मिडोक्राफ्ट की पहली नौकरी छूटी, फिर दूसरी और वे हजारों अन्य लोगों की तरह घर लौट गए।

रूस से लेकर ब्राजील तक और नाइजीरिया से लेकर वेनेजुएला तक जो प्राकृतिक संसाधनों से संपन्न देश चीनी अर्थव्यवस्था के साथ फले-फूले थे, अब चीनी मांग घटने के साथ उनकी अर्थव्यवस्थाएं हिल गईं थीं। अपवाद सिर्फ ऑस्ट्रेलिया रहा। वह ध्वस्त होने से बच गया। वहां की स्वच्छ हवा, अच्छी शिक्षा व्यवस्था और चीन के भविष्य से आशंकित चीन के लोग अपना पैसा ऑस्ट्रेलिया के रीयल एस्टेट में लगाने लगे। चीन लोगों का इस क्षेत्र में निवेश 2010 की तुलना में 10 गुना बढ़ गया। हजारों चीनी परिवारों ने बच्चों को ऑस्ट्रेलिया के महंगे विश्वविद्यालयों में पढ़ने भेजा। ऑस्ट्रेलिया से चीन को खाद्य पदार्थों का निर्यात उछाल मारने लगा। चीनी निवेशकों ने मेलबर्न व सिडनी में नए बने आधे अपार्टमेंट खरीद लिए।

इसके बाद देश की राजनीतिक व आर्थिक जिंदगी में चीनी पैसे की भूमिका पर चिंतन शुरू हुआ। चीन से जुड़े बिज़नेस ऑस्ट्रेलियाई राजनीतिक दलों के दानदाता हो गए। चीनी सेना से जुड़ी एक कंपनी ने एक बंदरगाह 99 साल की लीज पर ले लिया। यह उस सैन्य ठिकाने के नजदीक है, जहां प्रायः अमेरिकी मरीन्स रहते हैं। किंतु मिडोक्रॉफ्ट जैसे लोग चीनी पैसे को वरदान मानते हैं। वे प्लंबर के रूप में 21 हजार डॉलर सालाना कमा रहे हैं, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि प्रशिक्षण पूरा होते ही उनकी आय दोगुनी-तीन गुनी हो जाएगी।

रीयल एस्टेट डेवलपर मानते हैं कि बहुत से चीनी परिवार ऑस्ट्रेलिया में घर खरीदने को उत्सुक है। पर्थ अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स के डेवलपर पॉल ब्लैकबर्न कहते हैं, 'उन्हें रिटर्न की चिंता नहीं है। वे तो ऐसी जगह निवेश करना चाहते हैं, जहां उनका पैसा सुरक्षित हो।' सरकारी आंकड़े बताते हैं कि 30 जून 2015 को खत्म वित्तीय वर्ष में सरकार ने 18.2 अरब डॉलर (करीब 1100 अरब रुपए) के चीनी रीयल एस्टेट निवेश मंजूर किए। यह इसके पहले के साल की तुलना में दोगुना है। यह अमेरिका में पिछले साल हुए इस क्षेत्र में कुल निवेश से तीन गुना से ज्यादा है। डेवलपरों का कहना है कि सरकारी मंजूरी के बिना इससे कहीं ज्यादा चीनी पैसा देश में आ रहा है। पूरे पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में बजट की समस्या है और वह उटाह पॉइंट बर्थ बंदरगाह को 50 साल की लीज पर चीनी खरीददार को दे रही है। मिनरल रिसोर्सेस जैसी छोटी कंपनियों ने इसका विरोध किया है, क्योंकि वे अन्य बंदरगाहों का इस्तेमाल नहीं कर सकतीं, जिन पर उनकी विशाल प्रतिद्वंद्वी बीएचपी का कब्जा है। पोर्ट हेडलैंड और पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में बेरोजगारी शायद ही बढ़ी है। मिडोक्रॉफ्ट जैसे को पर्थ में काम मिल गया है और कई सिडनी व मेलबोर्न में निर्माण कार्यों में चले गए हैं।

अब ऑस्ट्रेलिया में चिंता यह है कि कहीं उसकी आर्थिक नियति एक दशक पूर्व के अमेरिका की तरह तो नहीं हो गई है। अप्रैल में ऑस्ट्रेलिया के केंद्रीय बैंक ने आगाह किया कि यदि चीनी मांग लड़खड़ाई तो रीयल एस्टेट मार्केट संकट में आ जाएगा और होम मार्टेगेज पर निर्भर देश की बैंकिंग व्यवस्था को नुकसान पहुंच सकता है। लेकिन अभी तो चीनी पैसा सैलाब की तरह आ रहा है। मिडोक्राफ्ट ने घर खरीदकर लोन भी चुका दिया है। उन्होंने लंबे समय की गर्लफ्रेंड से शादी कर ली है और अब प्लंबर का काम सीखते हुए वे दो बच्चों की परवरिश कर रहे हैं।

© The New York Times